'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2013-15
WPP Licence No.- U(C)-101/2013-15
R.N.I. No. 68180/98

प्रकाशन तिथि- 31 जनवरी, 2014

मूल्य : पाँच रूपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन - जस्टिस पब्लिकेशंस, टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001, फोन : 23354841-42

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com

● वर्ष : 17 ● अंक 5 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● 16 से 31 जनवरी, 2014

स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार, संतोष सबसे बड़ा धन व वफादारी सबसे बड़ा संबंध है।

—गौतम बुद्ध

केजरीवाल क्या बसपाईयों के रिश्तेदार हैं?

विनोद कुमार

अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ एवं इंडियन जस्टिस पार्टी के कार्यकर्ता जब भी सक्रिय होते हैं तो फौरन बहुजन समाज पार्टी के लोग प्रचार करने लगते हैं कि यह मिशन विरोधी कार्य है। डॉ. उदित राज बहन जी को कमजोर कर रहे हैं और लोग भी जब कभी समाज की आवाज उठाते हैं तो उनके बारे में भी यही कहा जाता है लेकिन हमला सबसे ज्यादा उदित राज एवं उनके साथियों पर ही होता है। परिसंघ के आंदोलन से ही 3 संवैधानिक संशोधन हुआ तब जाकर के आरक्षण बचा, बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार बढ़ा, निजी क्षेत्र में आरक्षण का मुद्दा देशव्यापी हुआ और आरक्षण बचाने के लिए संसद में विधेयक, पिछड़ों को उच्च शिक्षा में आरक्षण के लिए संघर्ष किया, 85वां संवैधानिक संशोधन की पैरवी 2006 में सुप्रीम कोर्ट में की और इसे बचाया और लोकपाल में आरक्षण सुनिश्चित कराया। बहुजन समाज पार्टी के लोग इन मुद्दों के ऊपर चुप रहे और उल्टे जो अधिकार, पदोन्नति में आरक्षण, परिसंघ के संघर्ष से मिला भी था वह सुश्री मायावती के मुख्यमंत्री काल में छीन गया। बहुजन समाज पार्टी वाले बताएं कि सन् 1997 से लेकर अब तक कौन सा अधिकार समाज को दिला सके और दूसरी तरफ हमारी उपलब्धि उपरोक्त में बतायी जा चुकी है। उन्होंने लोगों का दिल छूआ और हमनें दिमाग से काम लिया और इसी वजह से परिणाम निकला। लोग भावना से चलते हैं लेकिन उससे काम चलता नहीं। एक दिन इतिहास जरूर इंसाफ करेगा।

आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में बहुजन समाज पार्टी का जनाधार खिसका दिया तब तमाम जातिवादी बसपा के कार्यकर्ता राशन-पानी लेकर के अरविंद केजरीवाल के ऊपर नहीं चढ़े कि वे उनकी बहन जी को क्यों कमजोर किए। अगर डॉ. उदित राज ऐसा काम किए होते तो उनके ऊपर हमलों की बौछार हो गयी होती। अपना मूल कार्य छोड़कर के रात-दिन आलोचना में लग जाते कि हम भाजपा या कांग्रेस के दलाल हो गए हैं। बसपा लोगों के भावनाओं से खेलती है और जब हम अधिकार की बात करते हैं तो दोषी करार दिए जाते हैं। हमारी मुश्किल यह है कि या तो चुपचाप बैठ जाएं या समाज के लिए कुछ करें तो हम अपराधी हैं। 20 जनवरी को रोहतक में हरियाणा की शेरनी कांता अलड़िया के नेतृत्व में रैली हुई और डॉ. उदित राज कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। हरियाणा में बसपा का ग्राफ काफी तेजी से नीचे आया, उसके अनुसार यह लग रहा है कि लोग हरियाणा में नया विकल्प पैदा करने में सहयोग देंगे। वहां एक नेतृत्व की तलाश है लेकिन रैली के बाद फिर से बसपाई सक्रिय हुए और डॉ. उदित राज एवं कांता आलड़िया की वही आलोचना यह कहकर कि ये बहन जी को कमजोर कर रहे हैं। क्या इन बसपाईयों के आरक्षण विरोधी अरविंद केजरीवाल रिश्तेदार लगते हैं? उन्होंने जब बहन जी को कमजोर किया तो क्या इन लोगों के जुबान पर ताला लगा है? ये इतने पक्षपाती हो गए हैं कि कोई विकल्प न तैयार हो चाहे दलित विरोधी ताकतों के हाथ में दलित नेतृत्व चला जाए।

बुद्धिजीवियों से सवाल

31 जनवरी, 2014 को पंजाब केसरी, दिल्ली में प्रकाशित लेख

डॉ. उदित राज

देश में राजनीति और राजनैतिज्ञों दोनों के खिलाफ वातावरण बना हुआ है। कुछ लोग इसलिए विरोध में है कि वे जनतांत्रिक शासन प्रणाली के अच्छाईयों को जानते ही नहीं। अधिकतर शिक्षित वर्ग राजनीति से न केवल नफरत करते हैं बल्कि अपने को अच्छा भी साबित करते हैं। जब ये अपने को सबसे अच्छा मानते हैं तो समाज को सुधारने की जिम्मेदारी क्यों नहीं लेते? लोग राजनीति और समाज को अलग-अलग करके देखते हैं। जो खराब हो, उसका जिम्मेदार नेता होते हैं और जो अच्छा हो उसका श्रेय खुद। जो समाज में है वही राजनीति में जाएगा। अच्छाई और खराबी स्थान, जिम्मेदारी एवं परिस्थितिजन्य की देन है। जब 2011 में अन्ना हजारे का आंदोलन भ्रष्टाचार के खिलाफ उठा तो मध्यम वर्ग बहुत उत्साहित हुआ कि भ्रष्ट, जातिवादी एवं अपराधी नेताओं के दिन लदने वाले हैं। सभी जनप्रतिनिधियों को निकम्मा कहना, संसद में सभी चोर और अपराधी हैं, इस कृत्य से अराजकता को और बल मिला। इसी ताने-बाने और माहौल ने देश में एक अराजक आंदोलन को जन्म दे डाला।

मीडिया को चलाने वाले शिक्षित और बुद्धिजीवी ही हैं। अगर सच पूछा जाए तो इस आंदोलन को पैदा करने वाली मीडिया है। पत्रकारों और मालिकों

शेष पृष्ठ 4 पर...

हर्षोल्लास से मनाया गया डॉ. उदित राज का जन्मदिन

परमेंद्र

26 जनवरी को टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ, इंडियन जस्टिस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सफाई कामगार संगठनों का परिसंघ के मुख्य संरक्षक डॉ0 उदित राज जी का जन्मदिन 'जस्टिस डे' के रूप में मनाया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन परिसंघ एवं इंडियन जस्टिस पार्टी की दिल्ली इकाई के पदाधिकारियों ने मिलकर किया। दोपहर 01:00 बजे से ही जन्मदिवस समारोह में दिल्ली के कोने-कोने से लोगों के आने का सिलसिला शुरू हो गया। देखते ही देखते पूरा कार्यक्रम स्थल समर्थकों से भर गया। लगभग 2 बजे कार्यक्रम स्थल पर डॉ0 उदित राज परिवार सहित आयोजन स्थल पर पहुंचे। परमेंद्र, विनोद कुमार, सुरेश दीवान, कालीचरण, इंद्रजीत, चौधरी रवीन्द्र सिंह, लक्ष्मण राजौरा, चेतन दास चावरिया, योगेंद्र, संजय गहलोत, कमल सौदा, रंजीत लुहेरा, बी. अमित, अशोक पर्चा, दीपक कुमार, दीपक कुमार मकवाना, डॉ. अनिल कुमार, विनोद पिहाल, आनंद स्वरूप, अजय कुमार, योगेश कृष्णा, अशोक टांक, किशनलाल ढ़िलोर, अनिल कुमार, रामलखन पासी, के. सी. आर्या, मदन लाल बाल्मिकी, दिलबाग सिंह, ब्रह्मप्रकाश, वेद प्रकाश मरौठिया, राजेश धिगान, पप्पु तंवर, जी. पाल, महेंद्र सिंह, प्रशांत कुमार, शिवनारायण, मंगल सिंह, मदन लाल राजौरिया, आर. वी. सिंह, डॉ. नाहर सिंह, आर. के. वर्मा, योगेंद्र सिंह, विश्वनाथ, साधु सिंह, सत्य प्रकाश झरौता, एन. डी. राम, डॉ. कौशल पवार, डॉ. मुकेश कुमार, लवकुश, आर.ए. यादव सहित हजारों लोगों ने उदित राज जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएं दी।

डॉ0 उदित राज ने इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह का हार्दिक स्वागत किया और परिसंघ एवं इंडियन जस्टिस पार्टी के उन सभी नेताओं को धन्यवाद दिया जिन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ0 उदित राज ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि समाज व देश के लिए कुछ करने वालों का ही इतिहास बनता है और उन्हें जीवन काल में ही नहीं बल्कि मरने के बाद भी लोग याद करते हैं और सम्मान देते हैं। उन्होंने धीरूभाई अंबानी का उदाहरण देते हुए कि वे एक गरीब परिवार में पैदा हुए और जीवन में अथक प्रयास करते हुए आगे बढ़े और मरने से पहले वे देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर के अमीर लोगों की कतार में खड़े थे किन्तु मरने के बाद ऐसे लोगों का कोई खास इतिहास नहीं होता और समय के साथ-साथ लोग उन्हें भूल जाते हैं। उनके परिवार व निजी लाभ लेने वाले लोगों तक ही उनकी यादगार रह जाती है। उन्होंने बताया कि डॉ0 अम्बेडकर जैसे लोग जो जीवनभर समाज व देश के लिए संघर्षरत् रहे, आज उन्हें इतना सम्मान मिल रहा है और याद करते हैं कि शायद उनके जीवन काल में इस तरह का सम्मान नहीं मिला होगा। मैं चाहता हूं आज जितने भी लोग यहां एकत्रित हैं और देश व समाज के लिए जो कुछ कर रहे हैं, निश्चय ही उनका नाम इतिहास में लिखा जाएगा और लोग लंबे समय तक उन्हें याद करेंगे।

डॉ. उदित राज के जन्मदिवस के समारोह में मंच पर (बांये से दायें) कांता आलड़िया, अभिराज, सीमा राज, उदित राज, परमेंद्र, विनोद कुमार एवं अन्य

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दलित, शोषित, पिछड़ों पर अब जुल्म बर्दाश्त नहीं-कांता

यह आप (आम आदमी पार्टी) नहीं बल्कि सांप है- कांता आलड़िया

रोहतक,20जनवरी (मनमोहन कथूरिया)। अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. उदितराज व आईबीएसपी की सुप्रीमों कांता आलड़िया ने दलित बचाओ साझा मंच बनाकर दलितों के अधिकारों पर हो रहे कुठाराघात व उनके ऊपर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ हुंकार भरते हुए संगठित रहने का आहवान किया। मुख्य वक्ता के रूप में पधारे डा. उदित राज ने कहा कि पूरे देश में 85 वां संविधान संशोधन लागू है पर हरियाणा सरकार की नीयत में खोट के चलते इच्छाशक्ति के अभाव में यहां लागू नहीं किया गया। उन्होंने कहा कि जब सरकार का रवैया भेदभावपूर्ण हो जाए और दलितों के हकों पर चोट करने लगे तो समाज के लोगों को संगठित होकर अन्याय के खिलाफ संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने कहा कि शासकों की मानसिकता इस तरह बन गई है कि अधिकार गिड़गिड़ाने से नहीं ताकत से हासिल किए जाते हैं। बहुजन लोकपाल की आवाज बुलंद करने वाले डॉ. उदित राज ने कहा कि हरियाणा में जंगलराज कायम है इसलिए हरियाणा के बाहर प्रदेश की छवि बलात्कारी प्रदेश के रूप में जानी जाती है।

डॉ. उदित राज ने कांता को शेरनी की संज्ञा देते हुए कहा कि वे अब हरियाणा में कांता को सीएम बनाने तक पूरी ऊर्जा शक्ति लगा देगें। उदित राज ने कहा कि बेशक वे डॉ. भीमराव अम्बेडकर का स्मरण कम करते हैं लेकिन उनके विचारो को अमलीजामा पहनाने में पूरी ताकत झोंकते हैं। उन्होंने कहा कि बाबा साहब का सपना था कि समता समाज बने ताकि जातिविहिन समाज शक्तिशाली बन सके। उन्होंने कहा कि उनके ऊपर लेशमात्र भी भ्रष्टाचार का दाग नहीं है लेकिन दलितों पर हुए अत्याचारों के जख्म बहुत हैं। उन्होंने कहा कि जब निजीकरण बढ रहा था, आरक्षण को खत्म किया जा रहा था तो उन्होंने आरक्षण को बचाने के लिए संघर्ष किया। उन्होंने कहा कि जब तक प्राईवेट सेक्टरों में समाज को आरक्षण नहीं मिलता तो दलित बचाओ मंच उनके हकों के लिए संघर्षरत रहेगा। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे को संत लाहिड़ी सिंह ने सर्वप्रथम उठाया था। डॉ उदित राज ने उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती को भी अपने निशाने पर रखते हुए कहा कि उन्होंने समाज के हितों की अनदेखी कर केवल उनके वोट पर अपने हित साधे हैं।

राष्ट्रीय ऋषि लाहिड़ी सिंह ने कहा कि यह सोचने का विषय है कि अब तक देश का कोई प्रधानमंत्री दलित जाति से नहीं बना, यही नहीं उच्चतम न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश भी दलित जाति से नहीं है। उन्होंने कहा कि हमें डा. भीमराव अम्बेडकर के शिक्षित बनों ओर संगठित रहो के उद्देश्यों पर चलते हुए अपने हकों के लिए एकजुट होना होगा तभी देश शक्तिशाली बन सकता है। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर का सपना था कि प्रतिभा के आधार पर, गुणवत्ता के आधार पर जाति-विहीन समाज का सृजन हो ताकि समाज निर्भिक बन सकें। उन्होंने कहा कि जो अपने से बेहतर बनाने का मार्ग दर्शन करे वही विश्व नायक बनने के योग्य होता है।

आलड़िया ने कहा कि किसी भी प्रदेश के सभ्य और मर्यादित होने की कसौटी यह नहीं होती कि वह कितना अमीर या बलशाली है बल्कि कसौटी यह है कि किसी के अधिकारों का हनन तो

नहीं हो रहा। उन्होंने कहा कि हरियाणा प्रदेश में तो न केवल दलित, शोषित, पिछड़ों के अधिकारों पर आरी चलाने का कार्य हुड्डा सरकार ने किया, बल्कि सरकारी संरक्षण प्राप्त गुण्डातत्वों ने दलितों की बहु-बेटियों को हवस का शिकार बनाया। कांता ने कहा कि यदि हुड्डा सरकार इस शासन को सुशासन की संज्ञा दे तो इससे बड़ा प्रदेश का दुर्भाग्य क्या हो सकता है। कांता ने 10, जनपथ पर सवालिया निशान लगाते हुए कहा कि प्रदेश के कुशासन पर अधंविश्वास के चलते विश्वास की मोहर लगाना यह साबित करता है कि भ्रष्टाचार का दरिया 10 जनपथ को भी अपनी लपेट में लिए हुए है। दलित बचाओ मंच की संयोजक कांता ने हुड्डा सरकार को देश की भ्रष्टतम सरकार की संज्ञा देते हुए कहा कि एसईजैड की आड़ में घपले-घोटालों में अरबों रूपये का गोलमाल हुआ, बाईपास निकालकर प्राईवेट बिल्डरों को क्यों फायदा पहुंचाया गया, बड़े अधिकारियों से लेकर छोटे कर्मचारियों की सरकारी भर्ती के कड़वे सच हुड्डा सरकार की पैरों तले जमीन खिसका देगें।

कांता ने गरीब, शोषित, पिछड़े, दलितों से आहवान किया कि शासक दलित विरोधी है और केवल जाति विशेष का मुखिया है चेहरा बेनकाब हो चुका है। वोट की चोट से सत्ता को धराशाही करना है। कांता ने दलित समाज को सचेत करते हुए कहा कि वे चुनाव के समय शराब की पेटियों में न बिके बल्कि अपने मत का प्रयोग समाज की लड़ाई लड़ने वालों के हक में वोट दे। उन्होंने आम आदमी पार्टी को निशाने पर लेते हुए कहा कि यह आप नहीं बल्कि सांपनाथ है। जो लोगों को खासकर दलितों को भावनात्मक ब्लैकमेल कर रही है। कांता आलड़िया ने कहा कि दलित समाज को बीपीएल कार्ड, मीड डे मील नहीं चाहिए बल्कि रोजगार चाहिए ताकि समाज का स्वाभिमान ऊंचा रहे।

रैली में डॉ. उदित राज को पगड़ी पहनाकर व तलवार भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर जितेन्द्र सिंह, महासिंह रंगा, महासिंह भूपनिया, रितु चौधरी, केदारनाथ शर्मा, सत्यवान, जरावता, शिवचरण, कंवरसिंह, कृष्णा राणा, सत्यवान, आदि ने भी सम्बोधित किया।

(साभार : पंजाब केसरी)

रैली में पहुचंने पर जनता का हार्दिक आभार

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हरियाणा में जारी है दलितों पर दबंगों की दबंगई

रितु चौधरी

1966 में हरियाणा बनने से पहले पंजाब में दलितों पर अत्याचार कभी-कभार अपवाद के रूप में ही घटित होती थी, क्योंकि उस समय हरियाणा में जातिवाद न के बराबर था या यह कहें कि आज का दबंग उस समय खुद को असहाय अल्पसंख्यक ही महसूस करता था।

उस समय जाट समुदाय आम तौर पर दलितों को अपना सहयोगी भाई के तौर पर लेता था और गांव में हर नौजवान एक दूसरे को भाई और अपने से बड़ों को चाचा-ताऊ कहकर ही संबोधित करते थे। दूसरे गांव में मेहमान के तौर पर कोई भी आदमी जाता था तो वहां पर ब्याही हुई अपने गांव की लड़की को बहन-बेटी के रूप में एक रूपया देकर आया करते थे। वो दिन आज भी पूराने भाईचारे के इतिहास के रूप याद किये जाते हैं। लेकिन हरियाणा बनने पर आहिस्ता-आहिस्ता भाईचारे की ये बातें इतिहास बनने लगी और हरियाणा का दबंग समुदाय दलितों के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक उभार को एक चुनौती के तौर पर लेने लगा और इसी बात पर दलितों और दबंगों के बीच की खाई गहरी होती चली गई। अब देर-सवेर दबंग समुदाय दलितों को आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक हानि पहुंचाने की कोशिश में रहने लगा। इसकी कई सारी मिसालें हर बार यहां देखने को मिलते हैं।

जिला भिवानी के लोहारी गांव में बारात चढ़ने से पहले घुड़चड़ी पर हमला कर दिया और दलितों की दुल्हे समेत खुब पिटाई की। जिला इज्जर में 15 अक्टूबर, 2002 को शहर से केवल 5 किलोमीटर की दूरी पर दुलिना गांव में वह भी पुलिस चौकी में 5 दलितों की दशहरे के दिन भीड़ ने केवल इसलिए हत्या कर दी क्योंकि वह पास की किसी खाई में मृत पशु की खाल निकाल रहे थे।

जिला कैथल में शहर से 10-12 किलोमीटर दूरी पर गांव हरसोला में दंबगों ने दलितों पर इसलिए सामुहिक हमला कर दिया क्योंकि वह गुरू रविदास जंयती पर माईक लगाकर कीर्तन कर रहे थे। सभी दलित गांव छोड़कर शहर में आ गये और दसियों साल गुजरने के बाद भी उनकी गांव में वापसी नहीं हो सकी है। इस तरह हरियाणा में लगभग हर जिले में दबंगो द्वारा इस तरह की घटनायें दोहराई जाती रही हैं और दलितों को प्रताड़ित किया जाता रहा है।

ऐसी बात नहीं हैं कि इस प्रकार की घटनायें सिर्फ देहात में ही घटित हुई हो। बाद में यह सिलसिला तो शहरों में भी चल पड़ा। जिला सोनीपत के तहसील और उपमण्डल नगर गोहाना में 31 अगस्त, 2005 को वाल्मिकी समुदाय के पूरे के पूरे 150 घरों के मोहल्ले को दंबग समुदाय के लोगों की भीड़ ने जलाकर राख कर दिया।

सबसे आश्चर्य का विषय इस घटना में यह रहा कि वाल्मिकी समुदाय 15 दिन पहले ही अपने घरों को ताले लगाकर चले गये थे और दबंग समुदाय की भीड़ में वहां के सांसद, पुलिस इन्सपेक्टर जनरल तथा अन्य जिम्मेदार अधिकारी भी शामिल थे, जिन्होने खड़े होकर दंबगों से यह काम करवाया।

ऐसी घटनाओं के बाद जब मीडिया हरकत में आता है तो फिर दबंग समुदाय खाप और एरिया के नाम पर या सर्वखाप के नाम पर पुलिस केसों से बचने के लिए इकठ्ठा होकर माईक पर सरकार और पीड़ित समुदाय को सरेआम धमकियां देना शुरु करता हैं और मीडिया को झूठा और दुर्भावना ग्रस्त घोषित करता है। सरकार तथा पुलिस को भी कार्यवाही करने के विरूद्ध धमकाता है।

जब कभी-कभी सरकार मजबूरी में दिखावे के तौर पर केस दर्ज करके दोषियों को गिरफ्तार करती है तो फिर वही सर्वखाप दलितों को भाईचारे की दुहाई देकर केस खत्म करने की सलाह देते हैं और अगर ना माने तो गवाहों और सबूतों को खत्म करने का जी-तोड़ प्रयास करती है और आम तौर पर यह इसमें कामयाब भी होते हैं।

आश्चर्य की बात तो यह है कि सरकार उन दलितों को पुनर्वास और क्षतिपूर्ति के नाम पर धन और साधन उपलब्ध कराती है। दूसरी तरफ दबंग अपराधियों को बचाने की सरेआम मुहिम भी चलाती है। गांव मिर्चपुर कांड में बिल्कुल यही कारनामा अमल में लाई गई और उनसे दबंगों को भरपूर फायदा मिला।

मिर्चपुर गांव पूरी तरह से दबंग जाति का वर्चस्व रखता है। इस गांव के दबंगों ने बाकायदा साजिश के तहत 700-800 की संख्या में वाल्मिकी जाति पर पुलिस और प्रशासन की हाजिरी में हमला कर दिया और दो दर्जन से ज्यादा घरों को आग लगा दी। एक पिता और उसकी नाबालिग बेटी को जिंदा जला कर मार डाला। सारे मोहल्ले में पूरी लूटपाट की और फिर सब कुछ शांत। उसके बाद वाल्मिकीयों के 250 परिवार गांव छोड़ कर बाहर चले गये। इस कांड को मीडिया ने खूब उछाला और राज्य सरकार को खूब लानत दी गई। अंत में मजबूरी में पुलिस द्वारा केस दर्ज किया गया और 130 दंबगो को गिरफ्तार किया गया। 27 पहुंच वाले दबंगों को पुलिस की सिफारिश पर अदालत द्वारा बरी भी कर दिया गया। पहले यह उपमण्डल ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट की कोर्ट से हिसार एडिशन सेशन जज/ स्पेशल जज श्री बलजीत सिंह की कोर्ट में केस चला, लेकिन पहली दूसरी तारीख पर हजारों की तादाद में दबंगों ने पुलिस, सरकारी वकीलों और खुद अदालत को आतंकित करके ठीक तरह से गवाहियां नहीं होने दी। जिससे सर्वोच्च न्यायालय के विशेष आदेश से यह केस श्रीमति कामिनी लॉ स्पेशल जज, रोहिणी को सौंप दिया गया. जहां से 3 दोषियों को उम्र कैद, 5 को 5-5 साल की सजा, 7 लोगों को 2-2 की सजा सुनाई गई बाकि 82 दोषीगण को बरी कर दिया गया।

अब इस फैसले के खिलाफ दोषीगण, मुस्तगीस तथा हरियाणा राज्य द्वारा तीन अलग-अलग अपीलें दिल्ली उच्च न्यायालय के यहां विचाराधीन है। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस केस के वकील श्री रजत कलसन व उनके परिवार को सरकार, पुलिस तथा दबंगों द्वारा धमकियां, झूठे केस, तथा जान से मारने की बहुत कोशिशें भी की गई। इसमें देखने वाली बात यह है कि वकील जैसे पढे-लिखे लोगों को हरियाणा में बख्शा नहीं जाता।

दिनांक 25 जून, 2013 को हिसार के स्थानीय अखबार के मुताबिक, 125 वाल्मिकी परिवार जो कि हिसार के वेदपाल तंवर के फार्म हाउस के खुले मैदान में टेन्टों में शरण लेकर अपनी जिन्दगी गुजार रहे हैं क्योंकि सरकार ने आज तक उनके रहने का किसी तरह का कोई प्रंबध नहीं किया है। अब इनके बालिग हो चुके बच्चों के कोई रिश्तें स्वीकार नहीं करता क्योंकि इनके पास खुद का कोई घर-बार नहीं है।

मई 2010 को हिसार के गांव अलीपुर (खरड) में सदियों से बसे हुए बावरिया समाज पर दबंगों ने मार-पीट व लूटपाट की और उन्हें वहां से भगा दिया। आज तक दबंग दोषियों के खिलाफ कोई पुलिस कार्यवाही नहीं की गई, और न ही दलितों के पुनर्वास का कोई प्रबंध किया गया है। इतना सब होने के बाद भी अपराधों का यह सिलसिला अभी थमा नहीं है। बल्कि सच पूछिए तो बहुत तीव्र गति से चल रहा है।

फरवरी 2011 जिला हिसार के गांव दौलतपुर में खेत में काम कर रहे दलित युवक राजू ने एक वृक्ष के नीचे रखे घड़े से पानी पी लिया। इस पर वहां के दबंगों ने उस का हाथ काट दिया। अब यह केस स्पेशल जज अजय कुमार जैन की अदालत में विचाराधीन है।

मई 2011 को जिला हिसार के गांव भगाना में दबंगों ने दलितों के मोहल्ले के आगे दीवार खींच दी और उनके हिस्से की ग्राम शामलात भूमि पर कब्जे कर लिये। साथ ही वहां के दलितों को गांव से निकाल दिया गया। पीड़ित लोग आज तक हिसार के जिला सचिवालय के सामने धरने पर बैठे हैं, लेकिन सरकार के द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई।

दिसंबर 2011 में गांव देवसर जिला भिवानी में एक दलित दुल्हे की धुड़चडी ठाकुर जाति के सैंकड़ों दबंगों द्वारा रोक दी गई। धुडचडी में शामिल प्रत्येक व्यक्ति यहां तक की महिलाओं व बच्चों से भी मार-पीट किया गया और उन्हें नीच जाति के नाम पर अपमानित किया गया। इस घटना की सूचना पर भी पुलिस द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई।

बड़े अधिकारियों और राजनीतिज्ञों के पास जाकर गुहार लगाने पर भी किसी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं की गई। इसका नतीजा यह निकला कि दबंगों की हिम्मत और बढ़ गई और अप्रैल 2013 में उसी पीड़ित दुल्हे को एक पेड़ से बांध कर जीप से टक्कर मार मारकर हत्या कर दी गई। अब यह केस विशेष जज भिवानी की अदालत में विचाराधीन है और इस केस में केवल पांच दोषीगण हैं, जबकि हत्या में पचासियों ठाकुर जाति के दबंग शामिल थे।

सितम्बर 2012 में हिसार शहर के नजदीक डाबड़ा गांव में एक दलित लड़की के साथ दंबगों द्वारा सामुहिक बलात्कार किया गया। हिसार के विशेष जज श्रीमति मधु चन्ना की अदालत से चार दोषीगण को बरी कर दिया गया और चार को उम्र कैद की सजा सुनाई गई। जबकि पुलिस ने चार दोषीगण को चालान पर बहस के दौरान ही डिस्चार्ज करवा लिया। अब इस केस की क्रास अपीलें चण्डीगढ़ हाई कोर्ट में विचाराधीन है। इसमें उल्लेखनीय यह है कि पीड़िता के पिता ने इस सामुहिक ब्लात्कार की वजह से आत्महत्या कर ली थी।

अक्टूबर 2012 को सच्चा खेडा गांव में 5 दंबगों ने एक दलित लड़की से सामुहिक ब्लात्कार किया। इस केस में 3 दोषीगण को बरी कर दिया गया और दो को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। इस फैसले से निराश होकर पीड़ित लड़की ने आत्म हत्या कर ली। उपरोक्त दोनों केसों में क्रास अपीले पेंडिंग हैं।

3 नवम्बर 2012 को हिसार के पास डाया (मंगाली) गांव में एक नाबालिग दलित लड़की से चार लोगों ने सामुहिक बलात्कार किया और पुलिस ने इस केस में बलात्कार की दफा 376 ही निकाल दी। अब इसके खिलाफ याचिका सर्वोच्च न्यायालय में पेंडिंग है। जनवरी 2013 में पलवल शहर में दबंगों की भीड़ ने दलितों पर हमला कर दिया, परन्तु आज तक पुलिस द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई है। फरवरी 2013 को जिला भिवानी के गांव रतेरा में दबंग ठाकुरों ने एक और दलित युवक की घुडचडी नहीं निकलने दी। इस पर 25 दबंगों के खिलाफ विशेष जज भिवानी की कोर्ट में अब यह केस विचाराधीन है। फरवरी 2013 में ही जिला हिसार के सरसाना गांव में 13 साल की दलित मासूम बच्ची के साथ दबंगों द्वारा सामुहिक बलात्कार किया गया। इसमें चार दोषीगण में से एक को ही गिरफ्तार किया जा सका है। यह केस अब हिसार की एडिशनल जज की अदालत में विचाराधीन है। मार्च 2013 को जिला रोहतक के गांव मदीना में दबंगों ने दलितों के मोहल्ले पर अचानक फायरिंग कर दी, जिसमें दो दलित मारे गये। इस केस में 18 में से केवल चार मुलजिम पकड़े गये हैं। बाकी 14 को चार्जशीट में ही शामिल नहीं किया गया। यह पेटिशन भी सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है। 28-29 मार्च 2013 को हिसार जिले के गांव ढाबी में दंबगो ने एक दलित नौजवान की हत्या करके गांव के वाटर वर्क्स के पास डाल दिया। तमाम सबूतों के होने के बावजूद आज तक किसी भी दोषी को गिरफ्तार नहीं किया गया। अप्रैल 2013 भिवानी जिले के रिवासा गांव में एक दलित महिला अपनी छोटी बच्ची को दूध पिला रही थी कि अचानक दबंगों ने उस पर हमला बोल दिया। दूधमुंही बच्ची को जमीन पर फेंक कर मारा तथा दलित महिला से सामुहिक बलात्कार किया। इस केस में भी तमाम सबूतों के मौजूद होने के बावजुद किसी भी दोषी को सजा नहीं हुई।

हरियाणा आर्थिक और राजनितिक रूप में देश का अग्रणी राज्य है, परन्तु दलितों के लिए यह नरक बना हुआ है। दलितों के खिलाफ गांव बंदी की घोषणाएं बिल्कुल आम है। गांव शामूलात की जमीनों पर दलितों को पैर भी नहीं रखने दिया जाता। खापों और सर्वखापों, पंचायतों द्वारा रोजाना फतवे जारी किये जाते है। जहां तक उपरोक्त केसों का सवाल है तो यह हिम्मत वाले लोगों के कारण ही प्रकाश में आये हैं। वरना प्रत्येक वर्ष इनकी संख्या तो सैंकडों हजारों में है। वैसे तो अपराध प्रकिया कोर्ट के मुताबिक ऐसे दबंगों को कोर्ट की सजाओं के अलावा गांव और क्षेत्र के सारे इलाके को अपराध ग्रस्त घोषित करके उन सबकी हर तरह की चल अचल सम्पति को कुर्क करके सरकार को अपने कब्जे में लेकर पीड़ित समुदाय के लोगों में बांट देना चाहिए। ताकि ऐसे दबंग समुदाय के लोग भविष्य में कम से कम उस इलाके के ऐसी घटना की पुनरावृति न कर सके। इस कार्यवाही के लिए सरकार को सभी तरह की संभावनाओं का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

राष्ट्रीय अनूसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष ने हरियाणा को दलित बलात्कार प्रदेश बताने में भी हिचकिचाहट नहीं की। यहां विशेष उल्लेखनीय बात यह हैं कि जिला हिसार के दलितों की संस्थायें जैसे गुरू रविदास महासभा, दलित विधी चेतना मंच, संत कबीर महासभा, वाल्मिकी महासभाओं ने पुलिस की नाकामियों के खिलाफ प्रर्दशन और धरनों से दुनिया के लोगों का ध्यान आर्कषित किया है। लेकिन सच पूछे तो इनका कोई फायदा नहीं मिल पा रहा है। सच पूछे तो इस समस्या की जड़ में तो हिन्दु धर्म और समाज की रचना ही दोषी है। जब तक यह जड़ फलता-फूलता रहेगा, दलितों पर अत्याचार होता रहेगा।

पाठकों से अपील

'वॉयस ऑफ बुद्धा' के सभी पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने अभी तक वार्षिक शुल्क/शुल्क जमा नहीं किया है, वे शीघ्र ही बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के नाम से टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 को भेजें। शुल्क 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के खाता संख्या 0636000102165381 जो पंजाब नेशनल बैंक की जनपथ ब्रांच में है, सीधे जमा किया जा सकता है। जमा कराने के तुरंत बाद इसकी सूचना ईमेल, दूरभाष या पत्र द्वारा दें। कृपया 'वॉयस ऑफ बुद्धा' के नाम ड्राफ्ट या पैसा न भेजें और मनीआर्डर द्वारा भी शुल्क न भेजें। जिन लोगों के पास 'वॉयस ऑफ बुद्धा' नहीं पहुंच रहा है, वे सदस्यता संख्या सहित लिखें और संबंधित डाकघर से भी सम्पर्क करें। आर्थिक स्थिति दयनीय है, अतः इस आंदोलन को सहयोग देने के लिए खुलकर दान या चंदा दें।

सहयोग राशिः

पांच वर्ष : 600 रुपए

एक वर्ष : 150 रुपए

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शेष पृष्ठ 1 का...

बुद्धिजीवियों से सवाल

को लगता है कि राजनैतिज्ञ भ्रष्ट, अपराधी, अशिक्षित और स्वार्थी हैं। इस आंदोलन को पैदा करके वे यथास्थितिवादी राजनीति का विकल्प पैदा करना चाह रहे हैं। जब मिश्र में तहरीक चौक पर लोग इकट्ठा होकर के हुकूमत के खिलाफ आंदोलन कर रहे थे तो यहां के मध्यम वर्ग खूब प्रेरित होता रहा और कुछ हद तक आंदोलन यहां खड़ा भी कर दिया। कौन नहीं जानता कि मिश्र में जो आंदोलन था, उसके पीछे बाहर की भी शक्तियों का हाथ रहा और आज वहां स्थिति और भी खराब हुई है और वही स्थिति भारत में पैदा की जा रही है लेकिन मजबूत गणतंत्र के वजह से संभव नहीं होगा। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मीडिया उनके खिलाफ है जबकि यह झूठ है। मीडिया को अभी भी इनसे पूरी मोहब्बत है और बिगड़े हुए बच्चे को डांटने का ही काम कर रही है। अभी भी टाइम्स ऑफ इंडिया जैसे अखबार में 6 से 8 पेज तक 'आप' पर छापा जा रहा है, कुछ आलोचनात्मक तो कुछ तथ्यात्मक। जिस दिन मीडिया सही मायने में खिलाफ होगी उस दिन इन्हें छापना ही बंद कर देगी और यह आंदोलन जैसे आया था वैसे ही चला भी जाएगा। यह सत्य बात है कि राजनैतिज्ञ भ्रष्ट, अपराधी, लोलुप्त सब कुछ हैं लेकिन मीडिया को ऐसा खतरनाक खेल नहीं खेलना चाहिए कि देश खतरे में पड़ जाए।

हमारे यहां ही नहीं बल्कि दुनिया के और देशों में भी इस तरह के खेल खेले गए। बाह्य शक्तियों ने रूस में भी ऐसा ही माहौल पैदा कर दिया था और बार-बार जनमत संग्रह कराने के माहौल से अंततः वह टूट ही गया। जिन विकसित देशों में स्वस्थ जनतंत्र है और आर्थिक रूप से मजबूत हो रहे हैं, दुनिया की बड़ी शक्तियां मीडिया, एनजीओ और अन्य माध्यमों से उन देशों में व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश पैदा करते हैं। इससे वे मनमानी समझौते और नीतियां बनवाते रहते हैं और उन पर इन देशों की निर्भरता भी बनी रहती है। कौन नहीं जानता है कि वर्ल्ड बैंक, आईएमएफ जैसी संस्थाएं विकसित देशों पर किस तरह की शर्तें थोपते रहते हैं। अरविंद केजरीवाल ने सन् 2005 में परिवर्तन नाम का संस्था बनाया और अमेरिका द्वारा स्थापित रेमनमेगासेसे पुरस्कार 2006 में नवाज दिया गया। केजरीवाल ने एक साल में समाज में कौन सा परिवर्तन किया जिससे इन्हें यह पुरस्कार दे दिया गया? इनके आंदोलन को फोर्ड फाउंडेशन, हिओस, पनोस संस्थाओं से भारी अनुदान मिला और जिसका इस्तेमाल व्यवस्था को लगातार निंदा करके ज्यादातर नकारात्मक सोच वाले लोगों को संगठित कर लिया।

जहां तक भ्रष्टाचार की बात है यह जल्दी खत्म नहीं होने वाली है, हालांकि पूरी ताकत से आंदोलन चलाए रखना चाहिए। जब जनलोकपाल लागू करने की बात कर रहे थे तो हमने बहुजन लोकपाल के माध्यम से सवाल किया था कि क्यों नहीं रिश्वत देने वालों का भी भ्रष्टाचार इसके दायरे में शामिल किया जाए। इन्होंने कोई संज्ञान नहीं लिया तो हमने अपने बिल में उद्योग, एनजीओ और मीडिया आदि को भी लोकपाल के दायरे में लाने की बात की। जबतक पूर्ति होगी तो मांग बनी रहेगी, चूंकि प्राप्ति करने वालों से इन्हें लगातार सहयोग मिल रहा है इसलिए उनके ऊपर चुप हैं तो कैसे ये दावा कर सकते हैं कि आंदोलन सही दिशा में है? केजरीवाल जब विदेश अध्ययन करने गए तो उसके बाद उन्हें लौटने पर विभाग में तीन साल तक सेवा करना चाहिए था। जब तक विदेश में रहे, वेतन लेते रहे और आने पर सेवा नहीं दिया और जब 2011 में इस विवाद में घिरे तो लगभग नौ लाख रूपए लौटाए। क्या ये ईमानदार हैं? बच्चों की कसम खाए कि किसी से समर्थन नहीं लेंगे।

आम आदमी पार्टी में माओवादी, समाजवादी, उदारवादी और गांधीवादी सभी तत्व हैं और ऐसा ही मिश्रण दूसरे देशों के आंदोलन में रहा है। स्थानीय मीडिया से लेकर अंतर्राष्ट्रीय मीडिया का समर्थन रहा जैसे कि इस आंदोलन में रहा। दर्जनों प्रवासी भारतीय दिल्ली की विधानसभा चुनाव का सीधा निगरानी की तो इससे आराम से कहा जा सकता है कि बाहरी प्रभाव इस पर है। पूर्व में भी व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन रहे हैं जैसे कि 1976-77 में जेपी आंदोलन, 1989 में बीपी सिंह आंदोलन लेकिन उनकी विचारधारा रही थी और स्वयं राजनीतिज्ञ रहे हैं न कि अराजक।

अगर 1967 का व्यवस्था के खिलाफ समाजवादी आंदोलन को भी संज्ञान में ले लिया जाए तो देश में कई ऐसे नए आंदोलन उपजे लेकिन अंत में बहुत ज्यादा कुछ कर न सके और अब यह चौथा भी फेल हो रहा है। देश के लोगों को अब सोचना चाहिए कि अब कही उनकी अपेक्षाएं राजनैतिज्ञों से ज्यादा तो नहीं है। निश्चित तौर से ज्यादा है और जो काम बुद्धिजीवियों एवं अन्य वर्ग को करना है, वे सभी राजनैतिज्ञों और पुलिस आदि पर ही नहीं थोप दिया गया है। जनता खुद तो भ्रष्ट रहे लेकिन नेता ईमानदार चाहिए। वास्तव में देश को फेल करने में स्कूल और विश्वविद्यालय का ज्ञान, लेखक, पत्रकार एवं कहानीकार आदि हैं। या तो ये अपने को बुद्धिजीवी या दूसरों से समझदार न कहें, यदि कहें तो समाज को सुधारें जैसा कि दूसरे देशों में हुआ। फ्रांस, रूस, इंग्लैंड आदि में जो सामाजिक परिवर्तन और क्रांति हुई उसमें बुद्धिजीवी और मध्यमवर्गो की भूमिका थी न कि राजनैतिज्ञों की।

मुंबई में भी मनाया गया उदित राज का जन्मदिवस

डॉ. उदित राज के जन्मदिवस के मौके पर मंच पर (बांये से दायें) अफरोज खान, दीपक कुमार, प्रहलाद खंडारे, उदित राज, गुरू लाहिड़ी एवं अन्य

सोनी किशोर सिंह

इंडियन जस्टिस पार्टी के दिल्ली प्रदेश के पूर्व महासचिव अफरोज खान दो साल से मुंबई फिल्म इंडस्ट्री में रह रहे हैं और वहीं इनकी सक्रियता बन गई है। गत् 16 दिसंबर की रैली में कार्यक्रम देने दिल्ली आए थे और उनके साथ डॉ. प्रहलाद खंडारे एवं दीपक कुमार भी थे। अफरोज खान जी ने प्रस्ताव रखा कि इस बार का जन्मदिन मुंबई में मनाया जाएगा तो डॉ. उदित राज ने कहा कि 26 जनवरी को वह दिल्ली नहीं छोड़ सकते और इसलिए 25 जनवरी को उन्होंने इस कार्यक्रम को मुंबई में रखा। कार्यक्रम डॉ. अंबेडकर भवन, दादर, पूर्वी मुंबई में संपन्न हुआ। कार्यक्रम कराने में इन्हें मशक्कत करनी पड़ी। न केवल पूरे मुंबई में होर्डिंग आदि लगा रखी थी बल्कि सैकड़ों लोगों के खाने का इंतजाम भी इन्हें करना पड़ा। इनके अतिरिक्त नीलेश, हजारीलाल बरसीवाल, अश्विनी दूबे आदि ने कार्यक्रम कराने में योगदान दिया।

जाति आधारित समाज ने भारत को बहुत कमजोर कर दिया है। यदि हम आपस में गुटों, जातियों, उपजातियों में बँटे न होते तो दुनिया पर राज कर रहे होते। यह हमारी एकजुटता की कमी ही है कि पाकिस्तान जैसा छोटा देश हमें आँखें दिखाने की हिम्मत करता है और हम चुपचाप देखते रहते हैं। उक्त बातें इन्डियन जस्टिस पार्टी के अध्यक्ष उदित राज ने कही।

मुंबई में अपने जन्मदिन के मौके (25 जनवरी) पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुये उन्होंने कहा कि भारत की ये विडंबना है कि हम आपस में ही बंटे हुये लोग हैं, जिसके कारण हमारी शक्ति एकजुट होकर महाशक्ति नहीं बन पा रही। इस दौरान निजी क्षेत्र में अनुसूचित जाति-जनजाति को आरक्षण देने की वकालत करते हुये उन्होंने कहा कि सदियों से ये जातियाँ प्रताड़ित हो रही हैं, इन्हें अब अपना हक चाहिए। जन्म आधारित व्यवस्था को मानने से इन्कार करते हुये उन्होंने कर्म आधारित व्यवस्था की बात कही। उन्होंने कहा कि कुछ लोग आरक्षण दिये जाने का विरोध करते हैं लेकिन वो लोग अनुसूचित जाति जनजाति के सदियों से हो रहे शोषण के खिलाफ कभी विरोध नहीं करते। अगड़ा वर्ग कभी पिछड़ों द्वारा मल-मूत्र उठाने, कचरा साफ करने, मरे जानवरों का खाल निकालने जैसे घृणित काम से उन्हें छुटकारा दिलाने की बात नहीं करता लेकिन आरक्षण के नाम पर ये तथाकथित बुद्धिजीवी एकजुट होकर विरोध करने लगते हैं। इस मौके पर उदित राज जी ने यह भी कहा कि अब यह मनमानी नहीं चलेगी और वंचितों को उनका हक मिलना ही चाहिए।

कार्यक्रम में कई गणमान्य व्यक्तियों ने शिरकत की और अपने विचार रखे। इस दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम भी पेश किया गया जिसमें बॉलीवुड के कई पार्श्वगायकों ने देशभक्ति गीत गाकर उपस्थित लोगों का मनोरंजन किया। कार्यक्रम का अंत उदित राज जी ने केक काटकर किया और इसके साथ ही संकल्प लिया कि वंचित वर्ग को यथाशीघ्र उनका हक दिलाने की दिशा में पुरजोर कदम उठाया जायेगा।

मीणा बनकर 32 साल नौकरी कर गए शर्मा जी

महेश शर्मा, जयपुर। वन विभाग में एक कर्मचारी की असली जाति का खुलासा 32 साल नौकरी करने के बाद हुआ। मई, 1981 में सुभाष नाम के व्यक्ति को उदयपुर (दक्षिण) वन मंडल में वनरक्षक की नियुक्ति मिली थी। नौकरी में रहते हुए उसे अनुसूचित जाति (एसटी) के प्रमाण-पत्र के आधार पर सहायक वनपाल की पदोन्नति भी मिल गई।

उसके खिलाफ करौली एसपी को पहली बार मई 2001 में शिकायत मिली कि उसने फर्जी कागजात से मीणा जाति के नाम पर नौकरी ली। उसके बाद मामले की जांच एक से दूसरे विभाग में होती रही। इस बीच जांच अधिकारियों को रिकार्ड नहीं मिले तो कभी जांच में ही दिलचस्पी नहीं दिखाई। अब शिकायत के 12 साल बाद आरोपी कर्मचारी के स्कूल रिकार्ड से पता लगा कि वह जाति से शर्मा (ब्राह्मण) है। विभाग के मुताबिक, कर्मचारी के रिटायरमेंट में करीब दो साल का समय शेष है।

वन विभाग के जांच अधिकारी की ओर से सहायक कलेक्टर, जयपुर को सुभाष चंद पुत्र शंकर लाल के संबंध में 17 जुलाई, 1987 को जारी मीणा जाति के अनुसूचित जन जाति प्रमाणपत्र (जो कि सुभाष चंद द्वारा प्रस्तुत किया गया था) संबंधी रिकार्ड मांगा गया। कई साल से लंबित जांच को पूरी करने के लिए अगस्त, 2011 के बाद से 8 बार इस रिकार्ड के बारे में लिखा गया। व्यक्तिगत भेंट भी की। इस पर भी रिकार्ड नहीं मिला तो चार बार कलेक्टर को भी मामले से अवगत कराया गया। इस पर पहले तो तहसीलदार जयपुर ने पत्र का जवाब भेजते हुए रिकार्ड देने में असुविधा जताई। आखिरकार सितंबर, 2013 में तहसीलदार ने लिखा कि जाति प्रमाण-पत्र उनके यहां से जारी ही नहीं हुआ।

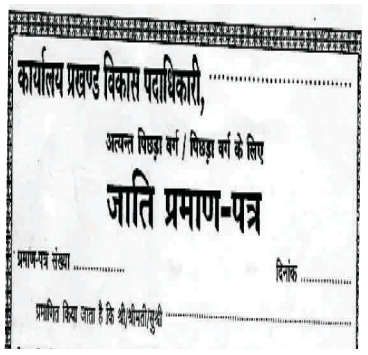

कार्यालय प्रखण्ड विकास पदाधिकारी,

अत्यन्त पिछड़ा वर्ग / पिछड़ा वर्ग के लिए

जाति प्रमाण-पत्र

प्रमाण-पत्र संख्या .....

दिनांक .....

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी .....

बगैर तस्दीक जारी कर दिया प्रमाण पत्र :-

सुभाष चंद ने विभाग को दिए बयान में कहा कि जाति प्रमाण पत्र जारी करवाते समय उनसे सहायक कलेक्टर जयपुर तथा तहसीलदार तहसील जयपुर ने कोई औपचारिकता नहीं कराई, बल्कि हलका पटवारी एवं तहसील के लिपिक से पहचान करा प्रमाण-पत्र जारी किए थे। सुभाषचंद ने वर्ष 1970 से खुद को जयपुर स्थित अशोक नगर की कच्ची बस्ती में रहना बताया। मूलतः अलवर जिले का है, जबकि नौकरी उदयपुर वन मंडल से की।

स्कूल रिकार्ड से सामने आया सच

जांच अधिकारी की ओर से तहसील कार्यालय से जाति संबंधी स्थिति साफ नहीं होने के बाद प्रधानाध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, लक्ष्मणगढ़ को नवंबर 2013 में पत्र लिखकर प्रवेश के समय सुभाष की जाति संबंधी दस्तावेज की जानकारी चाही। इस पर स्कूल ने सूचित कराया कि सुभाष चंद पुत्र शंकर लाल 5 जुलाई, 1967 से 27 सितंबर, 1971 तक स्कूल में अध्ययनरत था। रिकार्ड अनुसार, ये जाति से शर्मा (ब्राह्मण) हैं। स्कूल की ओर से सुभाष चंद शर्मा के नाम से स्कूल के विकास शुल्क के लिए 3 रुपए की जारी रसीद की फोटो सहित टीसी लेने के लिए प्रस्तुत प्रार्थना पत्र व हलफनामा की फोटो प्रक्रिया और स्थानांतरण प्रमाण-पत्र की फोटो प्रतियां भी उपलब्ध कराई।

जाति आधारित भेदभाव से जज नाखुश

मद्रास हाईकोर्ट के एक जज की अदालत कक्ष में की गई टिप्पणी ने सभी को चौंका दिया। वे एक रिट याचिका पर सुनवाई कर रही बेंच के अदालती कक्ष में अचानक दाखिल हुए। उन्होंने कॉलेजियम द्वारा अतिरिक्त जजों की नियुक्तियों पर खुले तौर पर नाखुशी जताई। दरअसल हाईकोर्ट कॉलेजियम ने 12 अतिरिक्त जजों को चुना था। हाईकोर्ट में 47 जज ही हैं जबकि मंजूर पदों की संख्या 60 है। मामले ने तब

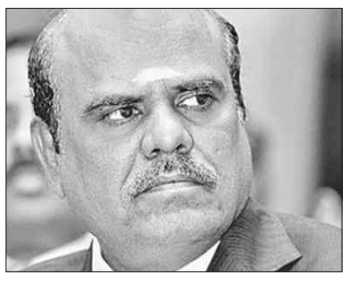

तूल पकड़ा जब वकीलों ने नियुक्तियों की निंदा की। वकीलों का आरोप है कि बार एसोसिएशन से जिन तीन वरिष्ठ वकीलों को चुना गया, वे सभी ब्राह्मण हैं। पिछड़े समुदाय के दावेदारों को उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिला। इस पर वरिष्ठ वकील आर. गांधी ने रिट याचिका दायर कर सूची बनाने की मांग की। जस्टिस के. के. शशिधरन और वी धनापलन की बेंच जब इस मामले में दलीलें सुन रही थी, तभी जस्टिस कर्णन अचानक दाखिल हुए। उन्होंने नियुक्तियों पर खुले तौर पर अपनी नाखुशी जाहिर कर दी। उन्होंने कहा कि चयन अनुचित है। मैं भी न्यायपालिका का हिस्सा हूं और अपने नाम से हलफनामा देना चाहता हूं। इस पर पीठ ने जज से हलफनामा दाखिल करने को कहा।

(साभार : शुक्रवार)

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

Rest of Page 7...

IS KEJRIWAL RELATIVE OF BSP LEADERS ?

We are criticized in any way whether we keep silent or do something for the welfare of the society. On 20.1.2014, a rally was organized by us at Rohtak by the Lioness of Haryana, Kanta Aladiya, in which Dr. Udit Raj was the chief guest. BSP's performance is on the down-ward slide in Haryana, which shows that people in Haryana are on the look-out for a suitable alternative to BSP but after the rally on 20.1.2014, the BSP leaders and workers again became hyper-active and made the same oft-repeated charges that Dr. Udit Raj and Kanta Aladiya are weakening the leadership of Behn Ji. Is anti-reservationist Kejriwal is the blood relation of BSP leaders and workers ? Why did the BSP leaders and workers not react at all when Kejriwal weakened her? They have become so much lop-sided that they do not want a suitable alternative to BSP even if Dalit leadership slips into the hands of anti-Dalit forces.

नालंदा के तेलहड़ा में मिला तीसरा प्राचीन विश्वविद्यालय

पटना। उत्खनन के दौरान नालंदा के तेलहड़ा में नालंदा और विक्रमशिला के बाद तीसरा प्राचीन विश्वविद्यालय मिल गया है। गुप्तकाल से पाल काल तक यह विश्वविद्यालय अस्तित्व में रहा था। बख्तियार खिलजी ने इसे जलाकर नष्ट कर दिया था। कला संस्कृति, युवा विभाग एवं बिहार पुराविद् परिषद 'के संयुक्त तत्वावधान में कुछ दिनों पहले पटना संग्रहालय सभागार में पूर्व भारत में नूतन उत्खनन' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम दिन पुरातत्व निदेशक अतुल कुमार वर्मा ने तेलहड़ा पर आलेख प्रस्तुत करते हुए खुदाई के दौरान अब तक मिले अवशेषों की जानकारियां दीं।

वर्मा ने अपने आलेख में कहा है कि प्राचीनकाल में तेलहड़ा सोन नदी के किनारे बसा हुआ था। चीनी यात्री इत्सीन ने अपने यात्रा वृतांत में बताया है कि यहां सबसे खूबसूरत बौद्ध मठ है। खुदाई में बौद्ध मठ का अस्तित्व मिला है। यहां उत्खनन के दौरान प्रस्तर और कांस्य की मूर्तियां, हाथी दांत की छोटी-छोटी मूर्ति मिली हैं। सैकड़ों मुहरें भी प्राप्त हुई है। सभी का अध्ययन हो रहा है। इससे नवीन ज्ञान में वृद्धि होगी। 2009 से यहां खुदाई शुरू हुई है। यहां तांबे की घंटियां मिल रही हैं। प्रतीत होता है कि हवा चलने पर घंटिया बजती थीं। गज-लक्ष्मी की मूर्ति के साथ महात्मा बुद्ध से जुड़े अनेक अवशेष मिल रहे हैं। वर्तमान में तेलहड़ा नालंदा से 50 किलोमीटर तथा बिहारशरीफ से 35 किलोमीटर दूर एकंगरसराय के पास है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम दिन आधा दर्जन विशेषज्ञों ने विभिन्न विषयों पर आलेख प्रस्तुत किया। पूर्व निदेशक पटना संग्रहालय, यूएस द्विवेदी और अनंताशुतोष द्विवेदी ने बक्सर के चौसा में हो रहे उत्खनन पर आलेख प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि यहां एक मंदिर की आकृति मिली है। यह किस धर्म की है, इसका अब तक पता नहीं चल पाया है। शुंग वंश के समय के धर्म चक्र प्राप्त हुए हैं। पांच फीट की एक आदमकद प्रतिमा भी मिली है। कुषाण काल की दीवार, कई टेराकोटा समेत उत्खनन से गुप्तकालीन संरचना प्रकाश में आ रही है। इस स्थान पर नार्थ ब्लैक पॉलिस वेयर के काली सुंदर मृदभांड प्राप्त हुए हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पूर्व निदेशक डा. बीएस वर्मा ने अपने आलेख में सोनपुर (गया), चिरांद और विक्रमशिला के महत्व पर प्रकाश डाला। सोनपुर राज्य का प्रथम उत्खनित ताम्र पाषाण कालीन स्थल था। चिरांद प्रथम नवपाषाण कालीन स्थान था। यहां नवपाषाण युग के अवशेष मिले हैं। हड्डी के औजार भारी मात्रा में यहां मिले हैं। कृषि की शुरुआत, पशुपालन की शुरुआत की कहानी मिल रही है। मछली मुख्य आहार था। गंडक, सरयू और गंगा के संगम स्थल पर चिरांद बसा हुआ था।प्राचीन भारतीय इतिहास पुरातत्व विभाग, इलाहाबाद के प्राध्यापक डा. जगन्नाथ पाल ने इलाहाबाद के निकट हेतापट्टी के उत्खनन पर प्रकाश डाला और बताया कि यहां नव पाषाण काल से गुप्त का तक का अवशेष मिले हैं। (साभार :दैनिक जागरण)

Rest of Page 7...

DR. UDIT RAJ'S BIRTHDAY CELEBRATED WITH GREAT FANFARE

further said that the society always remembers and respects the people who work for the welfare and advancement of the society and the country not only during their lifetime but also after their death. He cited the example of Dhirubhai Ambani who was born in a ordinary family and made exemplary progress and got great name and fame at the national and international level as one of the richest man in the world during his lifetime but such persons rarely get a name in the annals of history and with the passage of time such persons shortly disappear from the books of history. The memory of such persons is restricted to their family members and close friends. While elaborating his point further, he said that people like Dr. Ambedkar or those who work for others , are always remembered and honoured by the generations of people not only during their lifetime but even after their death. He expressed a desire that all the people who have come here and are committed to the cause of the welfare of the society and the country may continue to work in this direction wholeheartedly so that people remember them for a long time.

The function, among others, was attended by Parmendra, Vinod Kumar, Suresh Diwan, Kalicharan, Indrajeet, Chaudhary Ravindra Singh, Lakshman Rajora, Chetan Das Chawariya, Yogendra, Sanjay Gehlot, Kamal Sauda, Ranjeet Luhera, B. Amit, Ashok Parcha, Deepak Kumar, Deepak Kumar Makwana, Dr. Anil Kumar, Vinod Phihal, Anand Swaroop, Ajay Kumar, Yogesh Krishna, Ashok Tank, Kishanlal Tank, Kishan Dhilor, Anil Kumar, Ramlakhan Pasi, K. C. Arya, Madan Lal Balmiki, Dilbag Singh, Brahm Prakash, Ved Prakash Marauthia, Rajesh Dhigan, Pappu Tanwar, G. Pal, Mahendra Singh, Prashant Kumar, Shivnarayan, Mangal Singh, Madan Lal Rajoria, R. V. Singh, Dr. Nahar Singh, R. K. Verma, Yogendra Singh, Vishwanath, Sadhu Singh, Satya Prakash Jarawata, N. D. Ram, Dr. Kaushal Pawar, Dr. Mukesh Kumar, Lavkush, R. A. Yadav, Pramod Kumar and others.

09999504477

पर मिस काल करें

डॉ. उदित राज
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
अजा/जजा परिसंघ

यदि आप जातिविहीन समतामूलक समाज की स्थापना के पक्षधर हैं, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक भागीदारी के समर्थक हैं और अजा/जजा परिसंघ तथा इससे जुड़ी नवीनतम गतिविधियों की जानकारी चाहते है तो नीचे लिखे नम्बर पर मिस काल करें और कम से कम 10 साथियों को भी ऐसा करने के लिए कहें

09999504477

कुछ भी न करो तो ...

देश में आरक्षण विरोधी एवं जातिवादी ताकतों की सक्रियता को देखकर कुछ तो प्रेरणा लेनी चाहिए। अगर कुछ नहीं कर सकते हो तो कम से कम सप्ताह में पांच ऐसे लोग, जो अंबेडकरवादी और मिशनरी हैं, का नाम, पता व मोबाइल नंबर 56767 पर एसएमएस करें। 160 अक्षर (Character) से ज्यादा का एसएमएस नहीं भेजा सकता है। एसएमएस में सबसे पहले UR टाइप करें उसके बाद SPACE देकर नाम, पता एवं मोबाइल नंबर आदि दें। मोबाइल नंबर का होना ज्यादा जरूरी है और ईमेल हो तो उसे भी भेजें।

परिसंघ और समर्थक यदि इतना छोटा सा भी काम कर लें तो हमारे पास लाखों सही लोगों का मोबाइल नंबर आ जाएगा और जब भी चाहेंगे तो उन्हें अपने आंदोलन या आवश्यक सूचना एसएमएस के द्वारा सूचित करते रहेंगे। पूरा पता आ जाए तो और भी अच्छा है। यदि कई लोगों का साथ भेजना हो तो कम से कम नाम, जिला, प्रदेश और मोबाइल एसएमएस करें। इस तरह से एक से ज्यादा लोगों का डिटेल एक ही एसएमएस में आ जाएगा। भेजने के लिए सामने का उदाहरण को गौर से पढ़ें-

(Note- UR के बाद एक स्पेस अवश्य छोड़ें)

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:
Five years : Rs. 600/-
One year : Rs. 150/-

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दो दिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर मुजफ्फरनगर में संपन्न

डी. हर्षवर्धन

गत् 18-19 जनवरी, 2014 को यूपी के मुजफ्फरनगर के अंबेडकर छात्रावास में नेशनल एससी, एसटी, ओबीसी स्टूडेंट एंड युथ फ्रंट (नसोसवायएफ) का दो दिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। इस शिविर में बागपत, मेरठ, सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद, बिजनौर, अमरोहा, मुरादाबाद से आए 150 छात्र नेताओं ने भाग लिया। इस दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के पहले दिन डी. हर्षवर्धन (महाराष्ट्र) ने छात्रों को मार्गदर्शन करते हुए कहा कि नसोसवायएफ अंबेडकरवादी छात्र एवं युवाओं का संगठन है। दलित-आदिवासियों का राजनैतिक एवं गैर राजनैतिक संगठन होते हुए भी दलित-आदिवासियों का शोषण आज तक कम नहीं हुआ। बामसेफ, बहुजन समाज पार्टी, रिपब्लिकन पार्टी जैसा दलित-आदिवासियों का मजबूत संगठन होते हुए भी इन्होंने आजादी के 66 साल बाद भी समाज को कुछ नहीं दिया। 1950 में बाबा साहेब अंबेडकर ने संविधान में जो कुछ दिया वही हमारे पास है इसके अलावा कुछ हासिल नहीं हुआ। संगठनों ने समाज से पैसे इकट्ठा किये और खुद के संगठन को मजबूत करने पर उन पैसों को खर्च कर दिया लेकिन दलित-आदिवासियों के सामाजिक एवं आर्थिक समस्या पर ध्यान नहीं दिया। निजीकरण, भूमंडलीकरण, उदारीकरण के दौरान बामसेफ, बसपा ने इसके विरोध में कुछ विशेष नहीं किया। विरोध तो नाम का किया लेकिन सड़क की लड़ाई नहीं लड़ीं। इन दलित नेता एवं संगठनों की नाकामी के कारण ही दलित-आदिवासियों का कारवां लुटता रहा। अब इस कारवां को आगे बढ़ाने का काम नसोसवायएफ करेगा। दलित संगठनों ने कभी भी दलित छात्र एवं युवाओं को इकट्ठा करना महत्वपूर्ण नहीं समझा, कभी युवा दलित नेतृत्व को आगे आने नहीं दिया। सत्ता पाने एवं समाज को मांगनेवाला नहीं तो देनवाला समाज बनाने के चक्कर में खुद तो सत्ता हासिल कर ली लेकिन समाज को बदतर जिंदगी जीने के लिए धकेल दिया। अगर 1991 में बामसेफ, बसपा एवं रिपब्लिकन पार्टी ने सड़क की लड़ाई लड़ी होती तो इस निजीकरण के दौर में हमारी कुछ भागीदारी तय हो गयी होती। निजी क्षेत्र में आरक्षण, जातिरहित-समतामूलक समाज एवं समान व अनिवार्य शिक्षा की पूर्ति के लिए ही नसोसवायएफ का निर्माण किया गया।

शिविर के दूसरे दिन अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं नसोसवायएफ के मुख्य मार्गदर्शक डॉ. उदित राज जी ने कहा कि निजीकरण के इस दौर में दलित-आदिवासी छात्र एवं युवाओं का भविष्य अंधकारमय हुआ है। निजीकरण से सरकारी क्षेत्र का आरक्षण खत्म हो रहा है। उच्च शिक्षित होकर भी दलित-आदिवासी छात्र एवं युवा नौकरी के लिए जुझ रहे हैं लेकिन दलित होने के कारण कहीं नौकरी नहीं मिल रही है। देश में बड़े सामाजिक परिवर्तन के लिए युवाओं को जागृत करना होगा। युवाओं के बिना देश तरक्की नहीं कर सकता। सामाजिक बदलाव में युवाओं की भूमिका होती है। छात्र एवं युवाओं के बल पर ही हम अपने अधिकार लड़-झगड़कर ले सकते हैं। छात्र एवं युवा को अब सड़क की लड़ाई लड़ने के लिए तैयार रहना होगा, निजी क्षेत्र में आरक्षण ही अब दलित-आदिवासियों की आर्थिक-सामाजिक स्थिति में बदलाव ला सकता है। अगर निजी क्षेत्र में भागीदारी चाहिए तो हमें सड़क पर आना होगा, घर में बैठकर बात करने से संभव नहीं है। आजादी के बाद भी दलितों की समस्या जैसे का तैसा है, इसे बदलने व निजी क्षेत्र में आरक्षण हेतु युवाओं को आंदोलन के लिए आगे आना होगा।

इस शिविर का आयोजन रवि प्रकाश ने किया एवं इसे सफल बनाने हेतु मो. कामिल, विनोद कुमार, लोकेंद्र गौतम, नीटु, सचिन, कृष्णपाल धर्मेंद्र, प्रवीण, संजीव, संतकुमार आदि ने अपना अहम योगदान दिया।

सावित्रीबाई फुले का जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया गया

गणेश वाघमारे

महाराष्ट्र के सातारा में स्थित यशवंत राव चव्हाण सभागृह में गत् 6 जनवरी को नेशनल एससी, एसटी, ओबीसी स्टूडेंट्स एंड युथ फ्रंट (नसोसवायएफ) ने सावित्रीबाई फूले के जन्मदिन (3 जनवरी) को शिक्षक दिवस के रूप में बड़े उल्लास से मनाया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डी. हर्षवर्धन (राष्ट्रीय समन्वयक, नसोसवायएफ) थे। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रो. राजशेखर सालूंखे ने किया। डॉ. सालूंखे ने कहा कि सावित्रीबाई फूले का पूरा जीवन महिला एवं पिछड़े लोगों को शिक्षा मिले, के लिए समर्पित था। एक स्त्री होकर ऐसे समाज के खिलाफ सभी को समान शिक्षा का अधिकार दिलाने के लिए उन्होंने विद्रोह किया। आज के शिक्षक के लिए सावित्रीबाई फूले एक प्रेरणास्त्रोत हैं। वहीं डी. हर्षवर्धन ने कहा कि हम नसोसवायएफ द्वारा देश में नई संस्कृति स्थापित करना चाहते हैं, इसके लिए हम 5 सितंबर को राधाकृष्णन के जन्मदिन पर मनाए जाने वाले शिक्षक दिवस को नकारते हैं और सावित्रीबाई फूले का जन्मदिन 3 जनवरी ही शिक्षक दिवस के रूप में मनाएंगे।

इस कार्यक्रम का आयोजन नसोसवायएफ के महाराष्ट्र राज्य के उपाध्यक्ष गणेश वाघमारे, सातारा जिलाध्यक्ष गणेश चंदनशिवे एवं उपाध्यक्ष निशा सोनवणे ने किया था।

इससे संबंधित एक अन्य कार्यक्रम गत् 7 जनवरी को नांदेड़ के यशवंत महाविद्यालय के सामने नसोसवायएफ के छात्रों द्वारा शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया था। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. डॉ. दिलीप चव्हाण, उद्घाटक के. बालाजी राव (कार्यकारी अध्यक्ष, नसोसवायएफ) अध्यक्ष के रूप में राज्य के सचिव रवि सुर्यवंशी मौजुद थे। इस कार्यक्रम में संघरत्न निवडगें ने अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज की। इसके अलावा नांदेड़ जिलाध्यक्ष नागेश सोनुले, सुयश नेत्रेगावकर भी उपस्थित थे।

तीसरे कार्यक्रम के अंतर्गत, गत् 8 जनवरी को स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय में सावित्रीबाई फूले के जन्मदिवस पर शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष उप कुलपति प्रो. डॉ. पंडित विद्यासागर जी थे एवं विशेष अतिथि डी. हर्षवर्धन (राष्ट्रीय समन्वयक, नसोसवायएफ) थे। मुख्य वक्ता प्रो. डॉ. संगीता माकोणे थी। इसका आयोजन नसोसवायएफ के राज्य सचिव रवि सुर्यवंशी एवं नसोसवायएफ विश्वविद्यालय की कमिटी ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के लगभग सभी प्रोफेसर उपस्थित थे। छात्रों ने भी इसमें बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन स्वपनील मुले ने किया जबकि के. बालाजी राव ने मौजूद सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

अक्कड़-बक्कड़ में उलझी धरकार (वसोरो) की जिंदगी

धरकार समाज बांस-बेंत का बर्तन बनाने वाली दलित

बाबूलाल धरकार

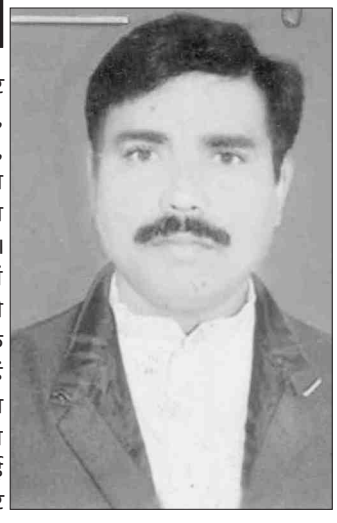

बाबूल लाल धरकार
अध्यक्ष
9918023024

धरकार जाति की आबादी पूरे देश में विभिन्न नामों जैसे धरकार, वसोरा, वासफोड़, वंसवार, वेनवंश, वरार आदि से पूरे देश में जाना जाता है। इस दलित जाति की आबादी देश में लगभग सभी जगह है। अलग-अलग जिले-प्रदेशों में अलग-अलग नामों से जाने वाली यह दलित जाति सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से काफी पीछे हैं क्योंकि 67 साल आजादी के बीत जाने के बाद भी इस जाति का न तो कोई एनजीओ और न ही कोई राजनैतिक नेता-प्रतिनिधि ने खबर लिया। यह दलित निर्बल जाति कभी-कभी सड़कों के किनारे बांस-बेंत के बर्तन बनाते नजर आ जाते हैं। किसी प्रकार अपनी जिंदगी गुजारने वाली इस जाति के ऊपर सरकार की तमाम गरीबी उन्मूलन योजनाएं छलावा मात्र है। इस जाति का मुख्य पेशा बांस-बेत के बर्तन बनाकर, मजदूरी करके अपना एवं अपने परिवार का भरण-पोषण करना है। हिंदू त्योहारों में जैसे छठ त्योहार आदि एवं वैवाहिक संस्कारों में बांस के बर्तन इस्तेमाल किए जाते हैं, ये बर्तन इसी समाज की देन है। अभी तक इस कलाकार जाति पर सरकार की निगाहें नहीं गयी है, जिससे इनका विकास अभी तक नहीं हो पाया है। धरकार जाति का विकास नहीं होने का एक प्रमुख कारण इस समाज का सामाजिक संगठन का न होना भी है जिसके कारण इस जाति को अब तक काफी नुकसान हुआ है।

इन्हीं समस्याओं को लेकर धरकार समाज में जन्में बाबू लाल धरकार ने समाज को इकट्ठा करने के लिए दलित एवं धरकार समिति संगठन बनाकर के धरकार, वसोर, वैनवंश, वमफोड़, वरार आदि अपनी जाति समाज में जा-जा कर जन जागृति कर रहे हैं। इस जाति के पूर्वज महाराजा वेन हैं जिसका वृतांत हावंश पुराण, शिवपुराण में मिलता है। अपने समाज में चेतना लाने के 'महाराजा वेन जन सेवा ट्रस्ट' के तत्वाधान में महाराजा वेन जयंती एवं धरकार सम्मेलन 4 फरवरी 2014, मंगलवार को गड़बड़ा धाम, इ्रमण्डगंज, मीरजापुर, यूपी में आयोजन किया गया है। जिन वेन वंशीय स्व जातीय भाईयों को खबर मिलें, निवेदन है कि जयंती में पहुंचकर इसे सफल बनायें।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सफाई कामगार संगठनों का परिसंघ

द्वारा

सफाई पेशे में ठेकेदारी खत्म कराने के लिए 17 फरवरी को दिल्ली के मुख्यमंत्री का घेराव

साथियो,

2006 में छठां वेतन आयोग लागू होने के बाद लगभग सभी विभागों में सफाई का काम ठेके पर दे दिया गया। जिसके कारण इस पेशे में फंसे लोगों का जीवन बद से बदतर हो गया। आम आदमी पार्टी ने जब इन सभी को नियमित करने का वायदा किया तो ये इससे जुड़ गए और जिताकर सत्ता तक ले आए और अब मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल इस मुद्दे पर चुप्पी साधे हुए हैं।

इस समय भ्रष्टाचार के खिलाफ पूरे देश में माहौल है। अन्ना हजारे और आम आदमी पार्टी इसके प्रतीक बन गए हैं। विशेष रूप से नौजवान बड़े आशावान हो गए हैं कि अब उनके भविष्य उज्जवल होने वाले हैं और बेईमानों का सफाया। इस सपने को मूल रूप से मीडिया ने दिखाया। जब कोई लहर चलती है तो उस समय दूसरे पक्ष की बात कम ही सुनी जाती है। निश्चित तौर से भ्रष्टाचार बड़ी समस्या है। जिस भ्रष्टाचार की बात इस समय चल रही है वह आर्थिक है, जबकि हमारे समाज में सामाजिक और धार्मिक भ्रष्टाचार उससे भी बड़ा है। संसद ने लोकपाल बना दिया है लेकिन उसमें रिश्वत लेने वाले पर प्रतिबंध लगा है देने वाले पर नहीं। अपने बहुजन लोकपाल में उद्योगजगत्, मीडिया एवं एनजीओ का भ्रष्टाचार शामिल किया था और केजवरीवाल पर भी दबाव बनाया लेकिन वे नहीं किए क्यों ? लोकपाल में आरक्षण हमारी वजह से हुआ लेकिन इन्होंने उसका विरोध किया। देश की जनता की नजर में अधिकारी और नेता ही भ्रष्ट हैं और उद्योग जगत, जज, दलाल, वकील एवं एनजीओ और मीडिया आदि भ्रष्टाचार में जैसे शामिल ही न हों।

इस आंदोलन के समर्थक दलित, आदिवासी और पिछड़े भी हैं। आम आदमी पार्टी को दिल्ली में 29 प्रतिशत दलित वोट मिला। शायद ही कोई दलित–आदिवासी सड़क, पुल, भवन, शराब का ठेकेदार, कोयला और खनिज के व्यापारी, आयकर दाता, हथियार का व्यापारी, बिक्री कर दाता, उत्पाद एवं सीमा शुल्क दाता हो। एक भी टेलीकॉम कंपनी के मालिक नहीं, न ही बिल्डर और कॉन्ट्रैक्टर हैं। निजी शिक्षण संस्थान, कॉरपोरेट हाउस, मीडिया हाउस, बड़े एनजीओ, हुंडी और हवाला व्यापारी और आयातक और निर्यातक होने का प्रश्न ही नहीं उठता है। अधिकारियों एवं नेताओं को इन्हीं लोगों के द्वारा रिश्वत और गलत नीतियां बनवाई जाती है। बिजली या कर की चोरी भी इन्हीं में से करते हैं। ऐसे में इस आंदोलन में दलित–आदिवासी का शामिल होने का क्या मतलब है ? दलित समाज से भी नेता और अधिकारी हैं लेकिन मलाईदार विभाग और पद पर प्रायः ये नहीं होते। दिल्ली में आप की सरकार बनी तो दो दलित मंत्री बने जो मलाईदार विभाग माने ही नहीं जाते। इनके पास समाज कल्याण, महिला और बाल, अनुसूचित जाति और जनजाति और रोजगार और सवर्ण मंत्रियों के पास सभी मलाईदार विभाग दिए गए, जैसे – परिवहन, पीडब्ल्यूडी, गृह, वित्त, योजना, पावर, सर्विस, शिक्षा, राजस्व, खाद्य एवं आपूर्ति, पर्यावरण, पर्यटक, प्रशासन, स्वास्थ्य, उद्योग आदि। कमोबेश पूरे देश में विभागों एवं पदों का वितरण इसी ढर्रे पर होता है। अपवाद को छोड़कर इन वर्गों की कितनी सीमित भूमिका भ्रष्टाचार करने में है यह जानना मुश्किल नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि इन्हें मौका मिले तो भ्रष्टाचार नहीं करेंगे लेकिन हां पीढ़ियों से अनुभव और पाचन शक्ति नहीं होने की वजह से वे उतना नहीं कर पाएंगे और करेंगे भी तो शोर ज्यादा होगा और पकड़े भी जाएंगे।

यक्ष प्रश्न यह उठता है कि क्या इनको भ्रष्टाचार मिटाने की मुहिम में शामिल नहीं होना चाहिए ? शामिल होना चाहिए क्योंकि इसका संबंध महंगाई, विकास और राष्ट्रीयता से है लेकिन इनका स्वयं का विकास भागीदारी जैसे दूसरे आंदोलनों से होगा। जिसके पास जमीन, व्यापार, उद्योग, संस्थान, मीडिया, शेयर एवं वित्त क्षेत्र में भागीदारी, ठेका, कोयला एवं अन्य खनिज, खादान आदि हैं ही नहीं तो कहां से आर्थिक मजबूती होगी और देश की मुख्यधारा में शामिल हो सकेंगे ? भ्रष्टाचार मिटाने वाला आंदोलन का संबंध इनकी भागीदारी और सम्मान से लगभग नहीं के बराबर है। इनमें से ज्यादातर यदि भ्रष्टाचार के शिकार हैं तो छोटे पैमानों पर और अपने हकों के लिए, जैसे राशन कार्ड, जन्मतिथि प्रमाणपत्र, जाति प्रमाण पत्र आदि प्राप्त करने के लिए न कि बड़ा लाभ लेने के लिए। भ्रष्टाचार मिटाने की आंधी आने से सामाजिक न्याय और भागीदारी की बात दब गई है। अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ की रैली गत् 16 दिसंबर को दिल्ली के जंतर–मंतर पर हुई कि संसद में पदोन्नति में आरक्षण देने एवं आरक्षण कानून बनाने के विधेयक को पास किया जाए। अब न खाली पदों पर भर्ती पर चर्चा है, निजी क्षेत्र में आरक्षण देने की बात भी दब गई, सफाई काम में ठेकेदारी प्रथा की समाप्ति एवं कर्मचारियों को नियमित करने की आवाज कमजोर पड़ गयी, अत्याचार एवं जुल्म हो रहे हैं, अब वह भी गौण हैं। अन्य क्षेत्र जैसे उच्च न्यायपालिका, ठेका, भूमिहीनों को भूमि, उद्योग और मीडिया में भागीदारी की बात को उठाया भी जाए तो कहां प्राथमिकता मिलने वाली है ?

2 अगस्त, 2008 को ताप्ती छात्रावास, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में अरविंद केजरीवाल ने यूथ फॉर इक्वालिटी की सभा आरक्षण के विरोध में की थी। इनके उभार के पीछे मनुवादी मीडिया है एवं सवर्ण नौजवान जो आरक्षण से बहुत ही नफरत करते हैं। आप पार्टी का उभार हाल ही में हुआ है तो दलित, आदिवासी एवं पिछड़े भी खुश हैं, लेकिन याद रखें कि अब इनकी भागीदारी की बात दब ही नहीं गयी है बल्कि आगे जो अधिकार हैं, वे भी खत्म हो जाएंगें। अरविंद केजरीवाल स्वयं वैश्य समाज के व्यक्ति हैं और उनकी टीम में सभी सवर्ण और आरक्षण विरोधी हैं। जब डॉ0 बी.आर. अम्बेडकर दलित समाज की मुक्ति के लिए संघर्षरत् थे तो गांधीजी पंचकुंइया रोड, दिल्ली के वाल्मीकि बस्ती में डेरा जमाकर कहा कि मल–मूत्र उठाने वाले वीर होते हैं। उस मार से अभी तक वाल्मीकि समाज उठ नहीं पाया और अब फिर से दूसरा बनिया – केजरीवाल के जाल में फंस रहा है, जो दलित और आरक्षण विरोधी है। विशेष रूप से वाल्मीकि समाज का वोट जिन मांगों पर इन्होंने लिया है, अगर वे 6 फरवरी, 2014 तक पूरी नहीं करते हैं तो हम 17 फरवरी, 2014 को हजारों–हजार की संख्या में सफाई कर्मचारी एकत्रित होकर मुख्यमंत्री का घेराव दिल्ली सचिवालय पर सुबह 11 बजे करेगें और अपनी मांगों को मनवाने के लिए बाध्य करेगें।

विनोद कुमार,
राष्ट्रीय अध्यक्ष
9871237186

IS KEJRIWAL RELATIVE OF BSP LEADERS

Vinod Kumar

Whenever office bearers and workers of the All India Confederation of SC/ST Organizations and Indian Justice Party become active , BSP leaders and workers immediately unleash propaganda that activities of IJP and the Confederation are anti-missionary and make allegations that Dr. Udit Raj is demolishing the leadership of Ms Mayawaty ,i.e., their Behnji. Even when similar issues are raised by others, the blame is still put on Dr. Udit Raj. Due to the struggle launched by the Confederation, three constitutional amendments were brought about and reservation could be saved, the pace of the spread of Buddhism was accelerated, the issues of reservation in private sector and the enactment of Reservation Bill were raised at the national level, all out efforts were made in the year 2006 in the Supreme Court to save the 85th Constitution Amendment and ensure reservation in the Lokpal Bill. Bahujan Samaj Party was silent on these issues and, on the other hand, whatever privileges were available regarding reservation in promotions, were taken away during Ms Mayawati's regime. Bahujan Samaj Party has not been able to secure any rights or privileges for Dalits since 1997 and on the other hand, our achievements are listed above.The Bahjuan Samaj Party just played with the sentiments of the people but we worked rationally and achieved results. People are moved by emotions which do not yield results. One day history will recognize this stark reality.

Aam Admi Party in Delhi made all out efforts to woo the vote bank of Bahujan Samaj Party and casteist-BSP workers and leaders did nothing to stop the onslaught of Kejriwal who took away a large chunk of BSP's vote bank. Had Dr. Udit Raj done such action like Kejriwal, there would have been a spate of attacks on him and he would have been branded as an agent of the Congress Party or BJP. BSP believes in playing with the sentiments of the people but even when we fight for the rights of the people, we are criticized.

Rest on Page-5...

DR. UDIT RAJ'S BIRTHDAY CELEBRATED WITH GREAT FANFARE

Dr. Udit Raj

Birthday of Dr. Udit Raj, National Chairman, All India Confederation of SC/ST Organizations, National President, Indian Justice Party and Chief Patron, Confederation of Safai Kamgar Organizations, was celebrated on 26.1.2014, at New Delhi, as Justice Day with great fanfare and solemnity which was organized by Delhi Units of Indian Justice Party and the Confederation. Large number of people came from every nook and corner of Delhi right from 1 PM onwards for participation in Dr. Udit Raj's birthday celebrations and by about 2 PM the lawn where the celebrations were taking place was full with dignitaries and others including Dr. Udit Raj and his family members. Some child artists and others presented dance and music items and the audience cheerfully applauded the items presented by the artists.

While extending a hearty welcome to the huge crowd present on this occasion, Dr. Udit Raj expressed his gratitude to the leaders of the All India Confederation of SC/ST Organizations and the Indian Justice Party for organizing the function in such a grand manner. He

Rest on Page-5...

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 17 ● Issue 5 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● 16 to 31 January, 2014

Posers to Intellectuals

Dr. Udit Raj

There is a wave of opposition against politics and politicians across the country. Some people are opposing these institutions because they are not aware of the good points of the functioning of a democratic system. A large majority of the educated people in the country not only hate politics but also claim to do betten than politicians. If these educated people consider themselves to be superior to the political class and the political system, why do they not take up the cudgels to reform the society? People view politics and society as two separate entities. Whenever something goes wrong, the blame is put on the politicians but when something good happens, they take the credit for the same. Politicians are very much a part of the social set-up. Good and bad results are the outcome of the given place, situations and circumstances. When Anna Hazare's campaign against corruption was started in 2011, the middle class was very much excited about it and felt that the days of the corrupt, casteist and criminal elements among politicians would soon be over. All the people's representativatives were deemed useless, Members of Parliament were considered corrupt and criminals. This attitude gave rise to anarchy. Such a net-work and atmosphere gave birth to a campaign for rule of anarchy.

Media is in the hands of the educated and intellectual class. The reality is that Media is largely responsible for this anarchy. Journalists and the publishers somehow feel that politicians are corrupt, criminal, uneducated and selfish. By creating a situation of anarchy, they want to bring about an alternative to the present system of politics. When Egyptians collected in huge numbers at Tehrik Chowk in protest against the Government of the day, the middle class of our country got inspiration from it and to some extent, a similar movement was started here also. Who does not know about the hand of the foreign powers behind the movement in Egypt? The situation in Egypt has become much worse now and attempts are being made to create a similar situation in our country which, of course, will not be possible because democracy has taken strong roots in India. Arvind Kejriwal has said that Media is against him which is nothing but a lie. Media is very much hand in glove with Kejriwal and is only playing the role of a person wielding a stick against spoilt child. Even now Times of India is giving 6 to 8 pages of its space to AAP, some critical and some factual When Media really becomes against AAP, it will stop giving any publicity to them and the AAP will die its natural death. It is a matter of fact that that politicians are corrupt, criminal and selfish but Media should not hype it up in such a way that it proves dangerous for the country.

It is not only in India but in other countries of the world also, a similar situation was created. Some foreign powers forced an identical situation in Russia where frequent opinion polls finally led to the disintegration of the Soviet Union. In the developed countries where democracy has strong roots with steady economic development, certain big powers with the help of Media, NGOs and other agencies are creating unrest among the people. With these tactics, the big powers force on these countries their policies and treaties which suit them so that these countries remain dependent on the big powers. Who is not aware of the terms and conditions of the institutions like World Bank, IMF which are forced on the developed countries? In the year 2005, Arvind Kejriwal set up an organization in the name of Parivartan and in the year 2006 he was bestowed with Ramon Magasaysay Award. What big transformation in the society was brought about by Kejriwal in just an year's time which entitled him to this Award. Kejriwal's movement was heavily funded by organizations like Ford Foundation, Havas, Panos etc. and these funds were mainly used by him for continuously criticizing the established authority and thus mobilize a group of people mostly with negative mindset.

So far as corruption is concerned, it cannot be wiped out so easily even though all out efforts should be continued with full force. When a campaign was going on for bring out a Jan Lokpal Bill, then we had raised a question through Bahujan Lokpal as to why the people who give bribe are not brought under the ambit of the Jan Lokpal Bill. When the protagonists of the Jan Lokpal Bill did not pay any heed to our suggestion in this regard, then we decided to include corporate houses, NGOs and Media etc. in the scope of Bahujan Lokpal Bill. So long as there is supply, demand will always be there and just because the protagonists of the Jan Lokpal Bill are getting maximum cooperation from corporate houses, NGOs and Media, they are not raising their voice against them. Thus, how can they say that the movement is in the right direction. On return from abroad where Kejriwal had gone on study leave, he had to serve his department for three years. During his stay abroad, he continued to draw salalry and did not render service for the required period. When in the year 2011, he was trapped, he returned Rs. 9 lakhs to the department. Is it honesty on the part of Kejriwal? He had vowed not to take support of any party.

Aam Admi Party consists of Maoists, Socialists, Liberals, followers of Gandhiji and other groups. Similar splinter groups are working in other countries.They have been getting active cooperation of the local and international media. Dozens of NRIs were actively involved in the recently held Delhi Assembly elections due to which we can safely say that these were influenced by foreign powers. In the past also, there have been movements against the establishment like the JP movement in 1976-77 and VP Singh movement in 1989 but the movements had their own ideologies and the heads of these movements were politicians and not anarchists.

Even if the 1967 socialist movement against the establishment is also taken into account, then the number of such movements will be quite big but in the end, nothing much could be achieved and the present movement is also doomed to fail. People of our country should ponder over the fact whether their expectations from politicians are on the higher side. In my opinion, these expectations are certainly on the higher side. Politicians and the police personnel should not be held responsible for fulfillment of expectations which essentially fall within the scope of intellectuals and other categories of people. While the people themselves are corrupt, they want honest leaders. In fact, the prime reasons for the failure are school and university education, journalists and writers. Either these persons should not call themselves intellectuals or consider them more intelligent than others and if they do so, they should come forward and reform the society. For any transformation or revolution in countries like France, Russia, England, etc., intellectuals and the middle class had a significant role to play instead of politicians.

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com Computer typesetting by N. K. Karn

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor